Content

:: अनुक्रमणिका ::

प्रथम अध्याय : विषय-प्रवेश : पृ. 001 - 076

प्रास्ताविक — उपन्यास की परिभाषा — उपन्यास और यथार्थ — उपन्यास और समाज का संबंध — प्रेमचन्द के समय तक उपन्यास का विकास — प्रेमचन्द पूर्व काल का हिन्दी उपन्यास — प्रेमचन्दयुग का हिन्दी उपन्यास — प्रेमचन्द का प्रारंभिक औपन्यासिक कृतित्व — हिन्दी में प्रेमचन्द का कृतित्व — प्रेमचन्द काल के अन्य उपन्यासकार — तत्कालीन युगबोध — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

द्वितीय अध्याय : पुनर्मूल्यांकन की उपादेयता : पृ. 077- 112

प्रास्ताविक — साहित्य के अध्ययन की अनेकानेक संभावनाएँ — प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रासंगिकता का सवाल — समकालीन उपन्यास साहित्य के संदर्भ में प्रेमचन्द के उपन्यासों का मूल्यांकन — प्रेमचन्द के शैशवकालीन अनुभवों के संदर्भ में उनके उपन्यासों का अध्ययन — दलित विमर्श के संदर्भ में प्रेमचन्द के उपन्यासों का मूल्यांकन — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

तृतीय अध्याय : प्रासंगिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द के उपन्यासों का पुनर्मूल्यांकन : पृ. 113 - 212

प्रास्ताविक — सेवासदन — वरदान — प्रतिज्ञा — प्रेमाश्रम — रंगभूमि — कायाकल्प — निर्मला — गबन — कर्मभूमि — गोदान — मंगलसूत्र — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

चतुर्थ अध्याय : समकालीन उपन्यास साहित्य के संदर्भ में प्रेमचन्द के उपन्यासों का मूल्यांकन : पृ. 213-266

प्रास्ताविक — समाजवादी-यथार्थवादी प्रवृत्ति — प्रेमचन्द की दूरदर्शिता — नारी-विमर्श के संदर्भ में समकालीन उपन्यास — दलित-विमर्श के संदर्भ में समकालीन उपन्यास — हिन्दू-मुस्लिम एकता और वैमनस्य के संदर्भ में समकालीन उपन्यास — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

पंचम अध्याय : प्रेमचन्द के शैशवकालीन अनुभवों के संदर्भ में उनके उपन्यासों का मूल्यांकन : पृ. 267-315

प्रास्ताविक — शैशवकालीन अनुभवों का एक लेखक के जीवन में महत्त्व — प्रेमचन्द का शैशवकालीन जीवन — वरदान — प्रतिज्ञा — सेवासदन — प्रेमाश्रय — कायाकल्प — निर्मला — [illegible]। गबन — रंगभूमि — कर्मभूमि — गोदान — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

षष्ठ अध्याय : दलित-विमर्श के संदर्भ में प्रेमचन्द के उपन्यासों का मूल्यांकन : पृ. 316-371

प्रास्ताविक — दलित-विमर्श और बौद्धमत — दलित विमर्श और हिन्दी साहित्य का मध्ययुग — [illegible] आधुनिक काल और दलित विमर्श — विवेकानंद और अछूत समस्या — महात्मा गांधी और अछूत समस्या — डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर और दलित-विमर्श — मुंशी प्रेमचन्द और दलित-विमर्श — दलित-विमर्श [illegible] और प्रेमचन्द के उपन्यास — देवस्थान रहस्य —

प्रेमा — वरदान — सेवासदन — प्रेमाश्रम — रंगभूमि — कायाकल्प — गबन — कर्मभूमि — गोदान — निष्कर्ष — संदर्भानुक्रम ।

सप्तम अध्याय : उपसंहार : पृ. 372-385

समग्रावलोकन पर आधारित निष्कर्ष — शिल्प का महत्व — उपलब्धियाँ — भविष्यत् संभावनाएँ ।

परिशिष्टिका ॥ ॥ : पृ. 386-394

॥1॥ परिशिष्ट – क : उपजीव्य ग्रन्थ
॥2॥ परिशिष्ट – ख : सहायक ग्रन्थों की सूची ॥ हिन्दी ॥
॥3॥ परिशिष्ट – ग : सहायक ग्रन्थों की सूची ॥ अंग्रेजी ॥
॥4॥ परिशिष्ट – घ : पत्र-पत्रिकाएँ